॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

विशद

श्रमण चर्या

संकलन/सम्पादन

आचार्य विशद सागरजी महाराज

कृति : विशद श्रमण चर्या

संकलन : **आचार्य विशद सागर**

संस्करण : प्रथम–नवम्बर 2005 प्रतियाँ 2000
द्वितीय–जुलाई 2010 प्रतियाँ 2000
तृतीय–जुलाई 2016 प्रतियाँ 2000

द्रव्यदाता :

1. श्री धर्मचन्द दिनेशकुमार चंवरिया, निवाई
2. श्री रामसहाय हुकमचन्द प्रेस वाले, निवाई
3. सौ. वीरमती धर्मपत्नी श्री नरेन्द्रकुमार चंवरिया, निवाई
4. श्री पदमचन्द राजेन्द्रकुमार सांवलिया वाले, निवाई
5. श्री भागचन्द चन्द्रप्रकाश जैन बनेठा वाले, निवाई
6. श्री राजेशजी छाबड़ा पुत्र श्री महावीरजी सूरत वाले, निवाई
7. कु. दीपाली जैन (सुपुत्री–सन्तरादेवी एवं श्री बाबूलालजी बगड़ी वाले, निवाई)

प्राप्ति स्थान :

- **आचार्य श्री विशद सागर जी संघस्थ दीदी**
  मो. : 9829076085
- **जैन सरोवर समिति, जयपुर** मो. 9414812008
- **सुरेश जैन** पी–958, शान्ति नगर, जयपुर मो. 9413336017
- **हरीश जैन** दिल्ली, मो. 09136248971
- **विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी** मो. 9812502062
- **धर्मचन्द जैन** चंवरिया वाले, निवाई मो. 9602336464

मुद्रक: नवजीवन ऑफसेट, झिलाय रोड़, निवाई फोन : 01438-222127

अपनी कलम से

दैनिक चर्या पूर्ण हो, करके प्रभु गुणगान।
निज आतम का ध्यानकर, करूँ विशद कल्याण॥

अनादि काल से संसार का परिणमन अपनी गति से चलता आ रहा है अनन्त काल तक चलता रहेगा। संसार अनन्त है संसार में रहने वाले जीव भी अनन्त हैं, किन्तु यदि इंसान रत्नत्रय को पालन करे तो अपने अनन्त संसार का अन्त अवश्य कर सकता है। रत्नत्रय का पालन करने के लिए मोक्ष मार्ग की साधना करनी होगी, रत्नत्रय के मार्ग पर गमन करने के लिए हमें अपने आवश्यक कर्त्तव्यों का पालन, पथ का पाथेय साथ लेकर चलना होगा तभी हमारी यात्रा पूर्ण हो सकेगी।

आवश्यक कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए एवं मार्ग पर बढ़ने के लिए सही मार्ग दर्शक की आवश्यकता होगी। इस हेतु प्रथम मार्ग दर्शक अर्हन्त देव हैं, जो इस काल दोष के कारण साक्षात् हमें प्राप्त नहीं हैं। दूसरा सोपान है शास्त्र जिसके सहारे हम मार्ग पर बढ़ सकते हैं। इस हेतु मोक्ष मार्गी साधक के लिए शास्त्र ही नेत्र है। आ. कुन्द कुन्द स्वामी ने प्रवचन सार में कहा भी है –

आगम चक्खू साहू, इन्दिय चक्खूणि सव्वभूदाणि।
देवा य ओहि चक्खू, सिद्धा पुण सव्वदा चक्खू॥

साधु का नेत्र आगम (शास्त्र) है संसारी प्राणियों के नेत्र इन्द्रियाँ हैं। देवों का नेत्र अवधि ज्ञान है तथा सिद्धों का सर्वांग शरीर नेत्र है। इस आधार पर अपने आवश्यक कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए **"विशद श्रमण चर्या"** पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है। संकलन में मेरे द्वारा कहीं त्रुटि रह गई हो ज्ञानी जन मुझे मार्ग दर्शन देने की कृपा करें।

- आ. विशद सागर

अनुक्रमणिका

खण्ड-अ

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	मंगलाचरण	1
2.	अथ दर्शन पाठ	2
3.	श्री नवदेवता स्तोत्रम् (मंगलाष्टकम्)	4
4.	अथ सुप्रभात स्तोत्रम्	7
5.	अथ घण्टाकरण मंत्र	10
6.	अथ महावीराष्टक स्तोत्रम्	11
7.	अथ वर्धमानाष्टक स्तोत्रम्	13
8.	अथ भक्तामर स्तोत्रम्	15
9.	अथ वीतराग स्तोत्रम्	27
10.	अथ लघु स्वयंभू स्तोत्रम्	29
11.	अथ कल्याणमन्दिर स्तोत्रम्	32
12.	अथ परमानन्द स्तोत्रम्	42
13.	अथ एकीभाव स्तोत्रम्	45
14.	चन्द्रप्रभः स्तोत्रम्	51
15.	अथ जिन चतुर्विंशतिका स्तोत्रम्	52
16.	अथ विषापहार स्तोत्रम्	59
17.	अथ नवग्रह शांति स्तोत्रम्	64
18.	अथ अद्याष्टक स्तोत्रम्	65
19.	अथ अकलंक स्तोत्रम्	67
20.	अथ विशद जिन स्तोत्रम् (आ. श्री द्वारा)	71
21.	अथ वृहद स्वयंभू स्तोत्रम्	77
22.	श्री भगवज्जिनअष्टोत्तर-सहस्रनाम स्तोत्रम्	103

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
23.	उवसग्गहरं स्तोत्रम्	123
24.	अथ श्री वज्रपंजर स्तोत्र	124
25.	अथ गोम्मटेस-थुदि	125
26.	अथ श्री सरस्वती स्तोत्रम्	127
27.	अथ चैत्यालयाष्टक-स्तोत्रम्	130
28.	अथ करुणाष्टक	132
29.	अथ निरंजन स्तोत्रम्	133
30.	अथ आध्यात्म शयन गीतिका	134

खण्ड-ब

31.	श्रमण रात्रिक (दैवसिक) प्रतिक्रमण	135
32.	अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमणम्	163
33.	वृहदालोचना	167
34.	लघु योगि भक्ति	178
35.	गणधर-वलय	186
36.	वृहद-आचार्य-भक्ति	220
37.	मध्यमाचार्य भक्ति	225
38.	श्रावक-प्रतिक्रमणम्	235
39.	आचार्य वन्दना	260
40.	सामायिक विधि	265
41.	पंचमहागुरु भक्ति (प्राकृत)	269
42.	द्वात्रिंसतिका (सामायिक पाठ)	271
43.	श्री ईर्यापथ भक्ति	276

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
44.	श्री सिद्ध भक्ति	282
45.	श्री चैत्य भक्ति	285
46.	श्री श्रुत भक्ति	293
47.	श्री चारित्र भक्ति	297
48.	श्री योगि भक्ति	300
49.	श्री पञ्चमहागुरु भक्ति	302
50.	श्री शांति भक्ति	304
51.	श्री समाधि भक्ति	309
52.	श्री नन्दीश्वर भक्ति	312
53.	श्री निर्वाण भक्ति	324
54.	तत्त्वार्थ सूत्रम्	331
55.	इष्टोपदेशः	352
56.	द्रव्य-संग्रह	359
57.	रत्नकरण्ड-श्रावकाचारः	367
58.	ऋषि मण्डल स्तोत्र (संस्कृत)	388
59.	जैन रक्षा स्तोत्र	398
60.	लघुसहस्त्रनाम स्तेत्र	401
61.	पार्श्वनाथ स्तोत्र	405
62.	मंगल गोचर माध्याह्न क्रिया विधि	407

ज्ञान ज्योति जली पार्श्व के नाम पर।
बन गये पार्श्व जिन ये शुभम् कार्य कर।।
पार्श्व जिन हैं विशद जग में तारण तरण।
हो प्रभो ! तव चरण हो समाधिमरण।।

श्री शांतिनाथ स्तोत्र

नाना विचित्रं भव दुःख राशि।
नाना प्रकारं मोहं च पाशि।।
पापानि दोषानि हरंति देवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥१॥

संसार मध्ये मिथ्यात्त्व चिंता।
मिथ्यात्त्व मध्ये कर्माणि बंधं॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥२॥

कामस्य क्रोधं माया विलोभं।
चतुः कषाया इव जीव बंधं॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥३॥

जातस्य मरणं ध्रूतस्य वचनं।
द्वौ शांति जीव बहु जन्म दुःख॥
ते दुःख छेदंति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥४॥

चारित्र हीनं नर जन्म मध्ये।
सम्यक्त्व रत्नं परिपालयन्ति।
ते जीव सिद्धंति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥५॥

मृदु वाक्य हीनं कठिनस्य चिंता।
पर जीव निंदा मनसा च बंधं॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥६॥

पर द्रव्य चोरी पर दार सेवा।
हिंसादि कांक्षा अनृत च बंधं॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥७॥

पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि बंधुर।
बहु जन्म मध्ये इहजीव बंधं॥
ते बंध छेदति देवाधिदेवाः।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!॥८॥

जपति पठति नित्यं शांति नाथाद् विशुद्ध।
स्तवन मधु गिरायां पाप तापापहारं॥
शिव सुख निधि पोतं सर्व सत्त्वानुकंपं।
सुकृत सुगुण भद्रं भद्र कार्येषु नित्यं॥९॥

माला शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं रत्नै स्वर्ण सूत्रै बीजैर्यारचित जाप मालिका
सर्व जपेसु सर्वाणि वाञ्छितानि प्रयछतु।।

***